तीव्र पुरुषार्थ - 3

➢➢ मैं शंकर समान हूँ... (1+4+4+4+2+2)

➳ _ ➳ महायोगी

→ ज्वाला स्वरुप तपस्वी स्वरुप

➳ _ ➳ त्रिनेत्री

→ कामदेव शंकर की तपस्या भंग करने आया था... पर जैसे ही शंकर ने आँख खोली, कामदेव जलकर भस्म हो गया

➳ _ ➳ जटाधारी

→ तपस्वी स्वरुप, निर्मोही अवस्था का प्रतीक

➳ _ ➳ चन्द्रमा

→ शीतलता

→ ज्ञान चन्द्रमा :- ब्रह्मा का प्रतीक

➳ _ ➳ गंगा

→ ज्ञान की गंगा को अपनी जटाओ पर धारण किया है

→ अगर गंगा सीधे धरती पर उतरती तो संसार की आत्माएं उसके वेग को सहन नहीं कर पाती... इसलिए बीच में शंकर बैठा है... और गंगा शंकर की जटाओ से होते हुए संसार तक पहुँचती है

➳ _ ➳ नीलकंठ (ज़हर पीने से कंठ नीला हो गया)

→ संसार के कल्याण के लिए विष पीना

→ त्याग

➳ _ ➳ सर्प

→ विकारों को वश में करना

➳ _ ➳ राख

→ वैराग

➳ _ ➳ बाघ की खाल पहनना

→ शरीर के प्रति अनासक्त

→ प्रक्रितिजीत

➳ _ ➳ त्रिशूल

→ अतीत , वर्तमान और भविष्य से परे

→ स्थापना, पालना और विनाश

➳ _ ➳ डमरू

→ ज्ञान का डमरू

→ नटराज - तांडव नृत्य

➳ _ ➳ कुल्हाड़ी

→ असुरों का विनाश

➳ _ ➳ रुद्राश माला

→ जो निरंतर राम की माला जप रहा है

➳ _ ➳ नंदी

→ देह रुपी नंदी पर मैं आत्मा सवार

➳ _ ➳ गण

→ इन्द्रिया ही गण है

➳ _ ➳ कैलाश

→ परमधाम

➳ _ ➳ काशी

→ मधुबन

Avyakt Murli Refrence :- Page Number 4 & 5 Of Teevra Purusharth Book

---